International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-08-2023, Accepted: 30-08-2023, Published: 16-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 18-20

अज्ञेयः यात्राओं की अन्तर्यात्रा

शुभांगी श्रीवास्तव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
बीसवीं सदी में हिन्दी के यायावर बने अज्ञेय ने देश–विदेश की जितनी यात्राएं की और जितना साहित्य लिखा सभी में उनकी समृद्ध संवेदनात्मक प्रतिभा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देता है। अज्ञेय छायावादोत्तर दौर के महत्वपूर्ण रचनाकार है। उन्होंने उपन्यास लिखे, कविताएं लिखी, आलोचना लिखी और यात्रा साहित्य भी लिखे। अज्ञेय का यात्रा साहित्य उनके रचनात्मक व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। अज्ञेय के व्यक्तित्व को उनकी यात्रा साहित्य के अध्ययन के बिना जाना नहीं जा सकता है। उन्होंने अपनी यात्राओं का चुनाव किया। उनको भारत के सांस्कृतिक इतिहास ने बहुत आकृष्ट किया और वे अपने लेखकीय जीवन की गतिशीलता के लिए अनुभवों के संवर्धन के लिए विभिन्न संस्कृतियों के प्रति अपनी जिज्ञासा के द्वारा यात्राओं की ओर गये। उन्होंने ऐसा जीवन चुना जिसमें एक जगह–टिक कर रहना नहीं था और संयोग भी ऐसा था कि अज्ञेय को इस प्रकार की गतिशीलता मिलती चली गयी। इस आलेख में इसी विषय पर चर्चा की गयी है।

मूल शब्दः यात्रा, खोज, अज्ञेय, बौध दर्शन, अस्तित्ववाद

अज्ञेय अपने पूर्ववर्ती जो पथिक यायावर रहे उनसे प्रभावित हैं। अज्ञेय की दर्शन, कला, स्थापत्य और पुरातत्व में बहुत रूचि रही। अज्ञेय एक अलग जमीन पर हजारी प्रसाद द्विवेदी की तरह विश्व इतिहास की छवियों को नाना जीवन प्रसंगों में देखने वाले रचनाकार है। इस तरह वे अपने रचयिता व्यक्तित्व के लिए यात्राओं को स्वीकार करते हैं और उनका एक सुनिश्चित ध्येय तय करते हैं। कौन सी यात्रा किसलिए हो ये उन्हें स्पष्ट रहता है। इन यात्राओं के जरिये वे विश्वदर्शन करते हैं।

वे बौद्धदर्शन की बदली हुई अर्थ छवियों को समझते हैं। विश्व इतिहास की गतियों को समझते हैं वे आधुनिकता और परम्परा को समझते हैं। वे परम्परा और आधुनिकता के बीच परम्परागत सम्बन्धों को समझते हैं। चक्रान्तशिला कविता में फ्रांस का पूरा इतिहास आता है। उन्हें कथाएं मिली, मूल्य मिले, बहुत से किरदार मिले हैं, रंग, भाषाएं, रूपक मिले हैं। उनके पावों में ऐसी जिजीविषा और नये–नये प्रयोग करने की क्षमता थी जो उन्हें निरन्तर यात्रा करने के लिए प्रेरित करती रही। अज्ञेय ने देश–विदेश की बार–बार यात्राएँ की और उसी से अनुभव संचित करके अपनी सभी रचनाएँ लिखी। अज्ञेय के यात्रा–वृत्तान्त और संस्मरण हिन्दी साहित्य के यात्रा साहित्य को बहुत समृद्ध बनाते हैं। अरे यायावर रहेगा याद (1953) तथा एक बूँद सहसा उछली (1960), 'भागवत भूमि यात्रा' जन–जनक–जानकी यात्रा सम्पूर्ण विश्व के ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक–सांस्कृतिक मन को समझने के लिए की गयी यात्रा का वृत्तान्त है।

अज्ञेय को नयी–नयी खोज करना पसंद था इसलिए वे कभी जाने–पहचाने रास्ते पर नहीं गये। हर बार वे कुछ नया करने का सोचते और करते भी थे। उन्हें अपने ज्ञान का घमण्ड नहीं था इसलिए वे सजग यायावर थे वे कहीं रूके नहीं लिखते रहे और चलते रहे इसलिए हमेशा पाते रहे। जो उन्होंने खोया उसका भी उन्हें दुःख नहीं था। भारतीय चिन्तन परम्परा में जो चीजें विलुप्त हो गयी थी जैसे– परम्परा–संस्कृति, इतिहास उन्हें वे दोबारा पाना चाहते थे और उसे नये तरीकों से अपनाना चाहते थे। उनके चिन्तन–मनन करने की प्रक्रिया भी उन्हीं की तरह अनथक यायावर रही। वे जैसे खुद कहीं नहीं रूके वैसे ही अपनी सोच को भी कहीं जड़ नहीं होने दिया। उन पर अरविन्द, विवेकानन्द, तिलक, गांधी, लोहिया, जयप्रकाश नारायण, टैगोर, मानवेन्द्र राय, फ्रायड, हेडेगर, नीत्शे आदि न जाने कितने मनीषियों का प्रभाव रहा पर उन्होंने अपने चिन्तन की मूल दृष्टि पर कभी आँच नहीं आने दी। भारतीय सभ्यता–संस्कृति के खोये हुए रास्तों की तलाश में वे निरन्तर अन्वेषी भाव से निकलते रहे।

उन्होंने अपने प्रमुख दो यात्रावृत्तान्तों के शीर्षक अपनी दो महत्वपूर्ण कविताओं से लिए है। जिससे पता चलता है कि अज्ञेय यात्राओं को किस संवेदनात्मक अनुभूति की श्रेणी में रखते हैं। अज्ञेय के यात्रा वृत्तान्तों में बुनियादी तौर पर मनुष्य की स्वाधीनता, स्वतन्त्रता, सृजनात्मकता और दायित्व के सूक्ष्म रूप में अंकित किया गया है। अज्ञेय 'मम' की सत्ता को बनाये रखते हुए ममेतर से संवाद करते हैं। वे स्वयं का कल्याण इसी में मानते हैं कि वे दूसरों का कल्याण करने में सक्षम हो। हालांकि भारतीयों को वे एक बेघर लेखक लगते थे वहीं यूरोपियों को एक ऐसा भारतीय जो कभी अपना घर नहीं छोड़ सका।

अज्ञेय ने लगभग दुनिया के सारे काम किये हैं चाहे वे किसी भी क्षेत्र से जुड़े हों। दुनिया भर की यात्रा की है। वे जो भी काम करते वे सामान्य न होकर कुछ भिन्न होते। वे ब्रिटेन के शासन में आतंकवादी और सेना अधिकारी भी रहे अमेरिका और सोवियत संघ गये, रेडियो का सम्पादन किया, कैलिफोर्निया में प्राध्यापक हुए, पत्रकारिता में गये, प्रयोगवाद के प्रवर्तक हुए, नयी कविता आंदोलन चलाया, परिमल संस्था बनायी इन सबको करते हुए एक से एक बढ़कर साहित्यिक रचनायें भी करते रहे।

अज्ञेय यात्री होने के कारण ही किसी एक स्थान, एक नदी, एक जगह, एक जाति, एक मिट्टी या एक रंग को अपना नहीं कहते थे। ये पूरी धरती उनकी अपनी थी। अज्ञेय नदी के द्वीप थे। उनकी नदी हमें वृहद् भूखण्ड से मिलाती है। वह भूखण्ड हमारा पितर है। अज्ञेय को पर्वत बुलाते थे। नदियाँ उन्हें पुकारती थी। सागर उन्हें आकर्षित करता था। यायावर को ये हमेशा याद रहेगा कि एक बूँद सहसा उछली थी जिसे उन्होंने सस्नेह देखा था। वे हरी घास पर क्षण भर बैठते है और कोमल टहनी से चिड़िया के उड़ जाने को देखते हैं जिसके जाने के बाद पत्ती थरथराती है। उन्होंने सागर की अनेक मुद्राओं को देखा था। साँप के सभ्य न होने पर उससे नाराज हुए थे, दोलती कलगी छरछरी बाजरे की को प्रेमिका के सौन्दर्य गान में प्रस्तुत किया था। उन्होंने तनी हुई रस्सी पर जिन्दगी को एक छोर से दूसरे छोर तक नाचते देखा था और रस्सी में जरा सी ढील होने पर संतुलन बिगड़ने की बेफिक्र प्रतीक्षा की थी।

अज्ञेय शब्दों की सत्ता को कलात्मकता से भरकर प्रस्तुत करते है। वैसे ही वे जीवन को भी सौन्दर्भ से भरकर प्रस्तुत करने की कला को भलीभाँति जानते हैं। वे स्वतंत्र विचारक हैं। वे अपनी ज्ञान की प्यास को अपनी यात्राओं के द्वारा बुझाते हैं। उन्होंने अपने जीवन का लम्बा हिस्सा विदेशों में बिताया था परन्तु फिर भी विदेशी प्रभाव से मुक्त रहे। भारतीयता उनके व्यक्तित्व का अंग सदैव बनी रहीं।

एलोरा की गुफाएं हो या फिरेंजे का स्थापत्य, अस्त्विवादी विचारधारा हो या लोहे की छत से सम्बन्धित अन्धविश्वास अज्ञेय के संज्ञान में जो कुछ भी आता है, प्रकाशित हो उठता है। अज्ञेय की भारतीय तीर्थ यात्रायें भाव यात्रायें संस्कृति के स्रोत की खोज रही है। विराट का संस्पर्श उन्हें भक्ति की ओर ले जा रहा था। उन्होने जाना कि भक्ति में जड़ताओं को तोड़ने की मूल्य दृष्टि है। पश्चिमी संस्कृति के आक्रमण से बहुत कुछ नष्ट हो गया है लेकिन यदि हमें अपनी संस्कृति का निर्माण फिर से करना है। तो भक्ति की सर्जनात्मकता से ही यह हो सकता है। मूल्यों की अर्थवत्ता की अनवरत खोज ही भारतीय आधुनिकता की मूल्य दृष्टि है। इस खोज को निरन्तर जारी रखना भारतीय आधुनिकता है।

अज्ञेय को भारत के विकास की चिंता सदैव सताती है। वे चाहे भारतीय स्थलों की यात्रा पर हो चाहे विदेशी यात्रा पर वे हमेशा भारत के विकास के लिए उन स्थानों से सीखते हैं और हमें विकसित होने का मार्ग दिखाते हैं। वे भारतीयता के प्रति गहन आस्था रखने वाले थे। अज्ञेय की यात्रापरक कृतियों में विभिन्न देशों की भिन्न–भिन्न परिस्थितियों का उल्लेख हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों के अंकन में उनकी विशेष रूचि थी।

यात्रा साहित्य और संस्कृति का घनिष्ट सम्बन्ध है। संस्कृति में समाज, कला, धर्म, इतिहास आदि समाविष्ट किए हैं तो यात्रा साहित्य इन सभी की कलात्मक अभिव्यक्ति है। अज्ञेय जहाँ भी जाते हैं उनका सम्पर्क उन प्रदेशों के समाज, व्यक्तियों एवं उनकी स्थिति रीति–रिवाज, खान–पान, वेश–भूषा आदि से रहता है। उन्होने संस्कृति के इन समस्त स्वरूपों एवं मार्मिक घटनाओं को अपनी कृतियों में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उनका यात्रा साहित्य विश्व संस्कृति के साक्षात्कार का सुन्दर दर्पण है। भारतीय यात्राओं से सम्बन्धित यात्रा वृतांत 'अरे यायावर रहेगा याद'' में असम से पश्चिमी प्रांत तक फैली पर्वतीय संस्कृति को रूपायित कर देश को संस्कृति के आधार पर एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास उनके द्वारा हुआ है। एक बूँद सहसा उछली में यूरोप के देशों की संस्कृतियों को उजागर कर भारत का सांस्कृतिक उन्नयन उनका लक्ष्य है, साथ ही देश–विदेश की संस्कृति की प्रस्तुति द्वारा सांस्कृतिक समन्वय भी वे चाहते है।

अज्ञेय के यात्रावर्णनों में भौगोलिक एवं ऐतिहासिक सूक्ष्म पर्यवेक्षण के साथ निबन्धकार की मस्ती तथा भावुक कलाकार की संवेदनशीलता प्राप्त है।

अज्ञेय की भाषा में प्रौढ़ता, उत्कृष्टता तथा साहित्यिकता विद्यमान है। उनके लिए भाषा एक बड़ी सांस्कृतिक जिम्मेदारी है। संस्कृति के विकास में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान हैं अज्ञेय का साहित्य भविष्य के मानव के दर्शन और साहित्य को समृद्ध करने के लिए है।

अज्ञेय ने देश–विदेश की यात्राओं से जो ज्ञान प्राप्त किया वह साहित्यप्रेमियों के लिए समर्पित किया। अज्ञेय की अनुभव समृद्धि और वस्तुत वैविध्य का कारण यात्रायें ही रही है। उन्होंने नये–नये स्थानों के भूगोल, नदी, पर्वतों एवं पशु-पक्षियों का परिचय दिया है। वे वहाँ के निवासियों के इतिहास परम्परा संस्कृति का अध्ययन करते हैं। वहाँ के लोगों की भाषा, कला, साहित्य एवं लोक संस्कृति का विवरण प्रस्तुत करते है। वहाँ के पुरातत्व तथा वास्तुशिल्प का ज्ञान उपलब्ध करवाते है।

अज्ञेय का साहित्य विषय और रूप शिल्प की दृष्टि से विविधताओं से भरा पड़ा है। अज्ञेय को अपने समय के प्रचलित उपादान घिसे हुए पुराने और अक्षम लगते थे। अज्ञेय अभिव्यक्ति की चरम अवस्था 'मौन' को मानते है। शब्द और भाषा से परे वे मौन को ही सम्प्रेषण का एक महत्त्वपूर्ण साधन स्वीकार करते है। इसलिए हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि और लेखक माने जाते है। उनका साहित्य वैविध्यपूर्ण है लेकिन उनके योगदान को यथोचित महत्त्व नही दिया गया। स्वप्निल श्रीवास्तव अपने लेख 'अज्ञेय का महत्त्व' में राहुल सांकृत्यायन और रामविलास शर्मा से उनकी तुलना करते हुए कहते है कि, ''अज्ञेय ने विपुल साहित्य लिखा है। उनके लिखे हुए को खारिज करना आसान नहीं है।''[1]

अज्ञेय के काव्य संग्रह–हरी घास पर क्षण भर, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, अरी ओ करूणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ। इन काव्य संग्रहों के शीर्षक से ही पता चलता है कि अज्ञेय प्रकृति के सभी रूपों से कितना प्रेम करते थे। वे घास, इन्द्रधनुष, सवेरा, नॉव, नदी, द्वीप आदि को कितने करीब से देखते और महसूस करते थे। अज्ञेय प्रकृति से अनुभव ग्रहण करते है।

उन्होंने एक सैनिक का जीवन जिया। वे उच्च श्रेणी के यायावर थे। उनकी सोच सीमित नहीं थी वे विश्व साहित्य का अध्ययन, अध्यापन करते थे। उन्होंने वर्ड्सवर्थ, टेनीसन, लांगफेलो तथा व्हिटमैन और उनके समकालीनों के साहित्य का गहन अध्ययन किया था। लेखन के साथ–साथ उनकी साहित्यिक यात्राएँ जीवन पर्यन्त जारी रही। भारत और विश्व के अनेक देशो के उनकी यात्राओं का परिणाम उनके दो यात्रा वृतान्त 'अरे यायावर रहेगा याद', 'एक बूंद सहसा उछली' है। नयी कविता में उन्होंने मिथकों के अनके प्रयोग किये है और उसे जीवन से जोड़ने का कार्य किया है। इनकी प्रकृति की कविताएँ जिसमें उड़ चल हारिल, पानी बरसा, दुर्वाचल, हेमन्त के गीत, सागर मुद्रा, ये मेघ, साहासिक सैलानी, बंधु है नदियाँ, असाध्य वीणा, कलगी बाजरे की में एक लय है, विशेष प्रकार का अंदाजे बयां है, जिसमें एक धीमा संगीत और प्रकृति के सूक्ष्मतत्व है। जैसे सोनमछली कविता में मछली हाँप रही है, काँच से लड़ती स्वतन्त्र होने को बेकरार इसे अज्ञेय की दृष्टि ने देखा सामान्य मानव एक्वेरीयम में रखी रंग–बिरंगी मछली की देखकर खुश होता है।

अज्ञेय ने अपनी यात्राओं से हिन्दी कविता को समृद्ध किया है। देश–विदेश के यात्रानुभवों में परिवर्तित करने के साथ–साथ उनकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति से हिन्दी कविता को सतरंगी रूप प्रदान किया। अज्ञेय ने जापान की यात्रा की। जापान की कविताओं का अनुवाद किया। हाइकू शैली की कविताएँ लिखी। ग्रीस की यात्रा के दौरान वहाँ के बहुत से स्थानों के बारे में कविताएँ लिखी। वहाँ के मिथकों को अपनाकर काव्य सृजन किया। यही बात फ्रांस तथा अन्य देशों के बारे में भी कही जा सकती है। कहा जा सकता है कि अज्ञेय ने काव्य– सृजन में 'भारतीयता' को कभी ओझल होने न दिया।

अज्ञेय गहरे दार्शनिक समझ के कवि है। उन्होने आधुनिकता को भी दार्शनिक दृष्टि से देखा है। लाथार लुत्श ने उदय प्रकाश से बातचीत में अज्ञेय के बारे में एक बहुत अच्छी बात कही है, ''अज्ञेय एक आधुनिक कवि है क्योंकि वे अपने माध्यम को भाषा को संशय से देखते है... संशय, मैं समझता हूँ कि किसी भी साहित्य में आधुनिकता का समावेश करता है,''[2] अज्ञेय आधुनिक कवि है। उन्होंने प्रयोगशीलता को महत्वपूर्ण माना था और इसके द्वारा हिन्दी में आन्दोलन खड़ा किया था।

अज्ञेय प्रकृति और विज्ञान को अखण्ड रूप में देखते है ऐसा विद्यानिवास मिश्र ने उनकी कविता बावरा अहेरी के सम्बन्ध में कहा है। वे प्रकृति की सर्वशक्तिमत्ता को भी प्रमाणित करते है। इनकी दुर्वाचल कविता में निजता की संलग्नता और साथ ही साथ यायावरी की उत्कट अभिलाषा भी दिखाई पड़ती है।

अज्ञेय परम्परा, कवि और कविता के अन्तर्सम्बन्धों पर निरन्तर विचार करने वाले कवि है। अपनी कविता 'कलगी बाजरे की' में वे पुरानी गढ़ी हुई प्रतिमाओं के संग चले आ रहे पुराने सत्य को असंगत की स्वीकार्यता के अर्थ में लेते है। इस कविता में उन सभी प्राचीन प्रतिमाओं का निषेध है जो सृजन की भूमि पर नया रचनेवाले के समक्ष आतंक बनकर उपस्थित हो जाती है। नये कवि को आतंक से मुक्त करने के लिए अज्ञेय उन खोखली प्रतिमाओं के महिमामण्डन से आगाह करते है। जिनमें से देवता तक प्रस्थान कर चुके है।

अज्ञेय सतत, सत्य और सन्धान करने वाली दृष्टि को लेकर आगे बढ़े हैं। वे यात्रायें करते हुए ही कविताओं को लिखते थे 'कितनी नावों में कितनी बार' शीर्षक कविता को अज्ञेय ने अपनी युगोस्लाविया की यात्रा में ल्युब्लयाना नामक किसी समुद्रीतट की अनुभूति में जीवन को सृजित करते हुए दिनांक 30 मई 1966 को लिखा था। अज्ञेय की रचनाएं प्रत्यक्ष प्रतीकों और बिम्बों की सहज यात्रा कराती है।

अज्ञेय जैसी बड़ी प्रतिभा को समझने के लिए पाठक के पास भी बड़ी प्रतिभा होनी चाहिए। उनकी प्रत्येक रचना में व्याप्त सृजनाशीलता और संवेदनशीलता उसे व्यक्त करने वाली शैली को धैर्यतापूर्वक सोचना–समझना और व्याख्यायित करना होगा। तभी अज्ञेय का सार्थक मूल्यांकन किया जा सकता है।

अज्ञेय की चिन्ता और चेतना का केन्द्र व्यक्ति की स्वाधीन चेतना के साथ उसकी स्वायत्तता, आजादी, अस्मिता तथा सृजनात्मकता का महत्व है। वे इस सन्दर्भ में व्यक्ति की सत्ता को पूरे गौरव और गरिमा के साथ वे समाज और समूह में शामिल करना चाहते है और यह शुभ है।

अज्ञेय का जीवन महाभिनिष्क्रमण का पाथेय रहा है। देश हो परदेश हो वही सागर किनारा और वहीं से दिखती पुकार अरी ओ करूणा प्रभामय जिसके लिए वे बार–बार न जाने कितनी बार कितनी नावों में कितनी बार सवार होते है और यह अन्तहीन यात्रा ही अन्तहीन सच्चाई का द्वार खोलती है।

निस्सन्देह यह कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में यायावर अज्ञेय का स्थान शीर्षस्थ हैं उनके यात्रापरक वर्णनों में जो विशेषताएँ है वह अन्यत्र कहीं नहीं।

सन्दर्भ सूची

1. अज्ञेय होने का अर्थः दृष्टि का विवेक, सं0 हितेश कु. सिंह, लोक भारती प्रकाशन, प्रथम सं0– 2020 पृष्ठ 154
2. शब्द संगत, जुलाई–अगस्त 2007 पृ.5।
3. अरे यायावर रहेगा याद – अज्ञेय, राजकमल प्रकाशन, प्रथम सं0
4. एक बूद सहसा उछली– अज्ञेय, राजकमल प्रकाशन, प्रथम सं0 2017
5. अंज्ञेय संचायिता– नंदाकिशोर आचार्य, राजकमल प्रकाशन
6. अज्ञेय होने का अर्थ : दृष्टि का विवेक – सं0 हितेश कु. सिंह, लोक भारती प्रकाशन, प्रथम सं0– 2020